सुन मेरी देवी पर्वतवासनी

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी
कोई तेरा पार ना पाया ॥

पान सुपारी ध्वजा नारियल ।
ले तेरी भेंट चडाया ,
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी...॥

सुवा चोली तेरी अंग विराजे ,
केसर तिलक लगाया ॥
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी..

नंगे पग मां अकबर आया,
सोने का छत्र चडाया ॥
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी...

ऊंचे पर्वत बनयो देवालाया.
निचे शहर बसाया ॥
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी...

सत्युग, द्वापर, त्रेता मध्ये ।
कालियुग राज सवाया ॥
॥ सुन मेरी देवी पर्वतवासनी...॥

धूप दीप नैवैध्य आर्ती ।
मोहन भोग लगाया ॥
॥ सुन मेरी देवी पर्वतवासनी...॥

ध्यानू भगत मैया तेरे गुन गाया ,
मनवंचित फल पाया ॥
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
कोई तेरा पार ना पाया ॥

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/12765/title/sun-meri-devi-parvataasni

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |